Printed Pages – 2

SEM-1345

M. A. (Fourth Semester) Examination, June 2021

HINDI

Paper : IV-III (Optional)

(प्रेमचन्द)

Time Allowed : Three hours

Maximum Marks : 35

***नोट** : सभी प्रश्न अनिवार्य हैं। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।*

1. देशकाल एवं वातावरण की दृष्टि से 'गबन' उपन्यास की समीक्षा कीजिए।

2. 'कर्मभूमि' मुंशी प्रेमचन्द का एक राष्ट्रीय उपन्यास है— विवेचना कीजिए।

3. 'रंगभूमि' उपन्यास का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

4. कहानी कला के आधार पर 'नमक का दरोगा' कहानी की समीक्षा कीजिए।

5. निम्नलिखित गद्यांशों में से किसी **एक** गद्यांश का सप्रसंग व्याख्या कीजिए—

(i) संसार को पुरुषार्थियों ने ही भोगा है, और हमेशा भोगेंगे। त्याग गृहस्थी के लिए नहीं सन्यासियों के लिए है। अगर तुम्हें त्याग व्रत लेना था, तो विवाह करने की जरूरत न थी, सिर मूंडवाकर किसी साधु-सन्त के चेले बन जाते, फिर मैं तुमसे झगड़ने न आती। अब ओखली में सिर डालकर तुम मूसलों से नहीं बच सकते, गृहस्थी के चरखे में पड़कर बड़े-बड़ों की नियम स्खलित हो जाती है।

(ii) आप एक युवती को किसी युवक के साथ एकान्त में विचरते देखकर दाँतो तले ऊँगली दबाते हैं। आपका अन्त:करण इतना मलिन हो गया है कि स्त्री-पुरुष को एक जगह देखकर आप सन्देह किए बिना रह ही नहीं सकते, पर जहाँ पर लड़के और लड़कियाँ एक साथ शिक्षा पाते हैं, वहाँ यह जाति-भेद महत्त्व नहीं रह जाता।

(iii) जिस समाज में रात-दिन मेहनत करने वालों की हालत उनकी हालत से कुछ अच्छी न थी, और किसानों के मुकाबले में वे लोग जो किसानों की दुर्बलताओं से लाभ उठाना जानते थे वे कहीं ज्यादा सम्पन्न थे, वहाँ इस तरह की मनोवृत्ति का पैदा हो जाना कोई अचरज की बात न थी।

(iv) नवयुवक युवावस्था में कितना उदंड रहता है, माता-पिता उसकी ओर से कितने चिंतित रहते हैं, वे उसे कुल कलंक समझते हैं, परन्तु थोड़े ही समय में परिवार का बोझ सिर पर पड़ते ही वह अव्यस्थित चित्त उन्मत्त युवक कितना धैर्यशील तथा कैसा शान्त चित्त हो जाता है।